कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका
खण्ड 05 भाग 06, (नवंबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 11–12

ग्रामीण जीवन में खजूर एवं खजूर के पत्तों की भूमिका और उनसे बने उत्पाद

रंजना कुमारी, संगीता देव, वीणा शाही, रूबी प्रांजना तमुली
सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय
डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय,
पूसा, समस्तीपुर (बिहार), भारत।
Email Id: – kumariranjanaaicrp@gmail.com

परिचय

खजूर एक पौषक तत्वों से भरपूर फल हैं लेकिन खजूर के फल के साथ–साथ उसके के पत्तों और टहनियों से भी कई चीज बनाई जाती हैं. खजूर की टहनियों और पत्ते से बहुत सारी महिलाएं, गांव देहात की झाड़ू बनाकर बिक्री करने का काम करती है जिनकी डिमांड भी खूब होती है. रोजगार क्षेत्र में महिलाएं अलग–अलग चीजों से तरह–तरह की वस्तुएं बनाती हैं, लेकिन ग्रामीण इलाकों में बड़े पैमाने पर खजूर के पत्तों से महिलाओं को झाड़ू, बुनाई, चटाई, टोकरी, पंखा आदि स्थानीय हस्तशिल्प में कच्चे माल के रूप में उपयोग होते हैं। बनाते हुए देखा जा रहा है. जिससे महिलाएं न सिर्फ आत्म निर्भर बन रही है, बल्कि अपने घर परिवार और बच्चों को अच्छी शिक्षा भी दे रही हैं. धार्मिक और सांस्कृतिक अवसरों पर इनका सजावट के लिए भी इस्तेमाल होता हैं।भारत विश्व का सबसे बड़ा खजूर आयातक है और इसकी स्थानीय किस्में परंपरागत रूप से गुजरात के कच्छ–भुज क्षेत्र में उगाई जाती थीं। हालांकि, उच्च गुणवत्ता वाली रोपण सामग्री की कमी के चलते इसकी खेती सीमित थी।खजूर के पत्ते ग्रामीण जीवन में केवल एक प्राकृतिक सामग्री नहीं, बल्कि पर्यावरण–हितैषी आजीविका, पारंपरिक कला और स्थानीय संस्कृति के संरक्षण का आधार हैं। इनसे बने हस्तशिल्प और घरेलू उपयोग की वस्तुएँ गाँवों में रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करने के साथ–साथ ग्रामीण परिवारों को अतिरिक्त आमदनी भी देती हैं।

खजूर की खेती के लाभ

1. आर्थिक मजबूती किसानों की आय बढ़ी और उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।
2. आयात पर निर्भरता कम देश में खजूर की उपलब्धता ने विदेशी मुद्रा की बचत में योगदान दिया।
3. पोषण सुरक्षा खजूर की खेती ने पोषक तत्वों की कमी को दूर किया।
4. पर्यावरण संरक्षण मरुस्थलीकरण कम हुआ और खेती के नए अवसर बने।

खजूर की प्रमुख किस्मे और पैदावार

खजूर की किस्में नर और मादा दो भागों में वर्गीकृत होती है।

मादा किस्म

1 **मेडजूल–** प्रति पोधा लगभग 75–80 किलो तक पेदावार होती है। एक फल को वजन लगभग 12 से 15 ग्राम होता हैं। पोधे की किमत 3433 रूपये प्रति पौध होती है।

2 **बरही–** औसतन पहली बार 65 किलो तक पहली बार पैदावार होती है। एक फल को औसत वजन 15 ग्राम तक होता है तथा टीएसएस 30 प्रतिशत तक होता है। पौधे की कीमत 2233 रूपये प्रति पौध होती है।

3 **खलास–** प्रति पौधा पैदावार 50 किलो तक पहली बार होती है। पौधे की कीमत 2233 रूपये प्रति पौध होती है।

4 **खुनैजी–** पहली बार औसतन पैदावार 40 किलो तक होती है। पौधे की कीमत 2183 रूपये प्रति पौध होती है।

नर किस्म

1 **अलइल सिटी–** प्रति पौधा पैदावार लगभग 40 किलो तक होती है। पौध की कीमत 2433 रूपये प्रति पौध होती है

2 घनामी– पहली बार पैदावार 25 किलो तक होती है। कीमत 2933 होती है।

खजूर की खेती में मुख्य रूप से मादा किस्मों के पौधे लगाये जाते है लेकिन पौधे पर परागकण की प्रक्रिया पूर्ण करने के लिए नर पौधों को लगाना भी आवश्यक होता है। अगर परागकण की प्रक्रिया न की जाये तो फल नहीं लगते है।

सरकार द्वारा खजूर की खेती को बढावा देने के लिए सभी प्रकार की किस्मों पर 75 प्रतिशत की सब्सिडी प्रदान की जाती है।

स्वास्थ्य लाभ

खजूर (फीनिक्स डेक्टिलिफेरा एल.) एक महत्वपूर्ण फल फसल है, जो खासकर शुष्क क्षेत्रों में उगाई जाती है। यह 70ः कार्बोहाइड्रेट से भरपूर होती है और 1 किलो खजूर 3,000 किलो कैलोरी प्रदान करता है। इसमें विटामिन–ए, बी–2, बी–7, पोटेशियम, कैल्शियम, कॉपर, मैंगनीज, क्लोरीन, फॉस्फोरस, सल्फर और आयरन जैसे पोषक तत्व भी भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। ह्रदय स्वास्थ्य, हड्डी स्वास्थ्य, रक्तचाप, ऊर्जा बढ़ाने वाला, मस्तिष्क स्वास्थ्य, स्वस्थ गर्भावस्था, कब्ज, कोलेस्ट्रॉल, वजन बढ़ाने में सहायक है।

क्रमांक संख्या	पोषक तत्व	मूल्य प्रति 100 ग्राम
1	पानी	21.32g
2	ऊर्जा	277kcl
3	कार्बोहाइड्रेट	74.97 g
4	प्रोटीन	1.81g
5	टोटल लिपिड (फैट)	0.15 g
6	कोलेस्ट्रॉल	74.97g
7	फाइबर (टोटल डायटरी)	6.7g
8	शुगर	66.47g
9	थायमिन	0.050mg
10	राइबोफ्लेविन	0.060 mg
11	नियासिन	1.610 mg
12	विटामिन बी-6	0.249 mg
13	फोलेट, डीएफई	15µg
14	विटामिन ए, आरएई	7µg
15	विटामिन ए,आई यू	149IU
16	विटामिन के (फाइलोक्विनोन)	2.7µg
17	थायमिन	0.050mg
18	राइबोफ्लेविन	0.060 mg
19	नियासिन	1.610 mg
20	कैल्शियम	64mg
21	आयरन	0.90 mg
22	मैग्नीशियम	54 mg
23	फास्फोरस	62 mg
24	पोटैशियम	696mg
25	सोडियम	1 mg
26	जिंक	0.44mg
27	जिंक	0.44mg

क्रमांक संख्या	खजूर के पत्तों की भूमिका	उनसे बने प्रमुख उत्पाद
1	झोपड़ियों, छप्परों और अस्थायी आश्रयों की छत बनाना, (गर्मी व बरसात से बचाव)	चटाइयाँ
2	ग्रामीणों को सस्ता व पर्यावरण-हितैषी कच्चा माल उपलब्ध कराना टोकरी, थैले,	झोले
3	हस्तशिल्प व कुटीर उद्योग से ग्रामीण महिलाओं/कारीगरों को रोज़गार देना	पंखे, झाड़ू
4	धार्मिक व सांस्कृतिक अवसरों पर सजावट/पूजन में उपयोग	टोपी, पर्दे, सजावटी वस्तुएँ
5	पारंपरिक कला व संस्कृति को बनाए रखना	अस्थायी छप्पर, टेंट की छत आदि

✻ ✻ ✻